

राम स्तुति

{॥ राम स्तुति ॥}

गोस्वामी तुलसीदास विरचित श्रीरामचरितमानस

बालकाण्ड

राम जन्म

भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी ।

हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप विचारी ॥

लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी ।

भूषण वनमाला नयन विसाला सोभासिन्धु खरारी ॥

कह दुई कर जेरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनंता ।

माया गुणन ग्यानातीत अमाना वेद पुरान भनंता ॥

करुणा सुख सागर सब गुण आगर जेहि गावहिं श्रुति संता ।

सो मम हित लागी जन अनुरागी भय—उ प्रकट श्रीकंता ॥

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै ।

मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ॥

उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहूत विधि कीन्ह चहै ।

कहि कथा सुहासि मातु वुरासि जेहि प्रकार सुत प्रेम लहे ॥

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहू तात यह रूपा ।

कीजे सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ॥

सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होई बालक सुरभूपा ।

यह चरित जे गावहि हरिपद पावहि ते न परहिं भवकूपा ॥

विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार ।

निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ॥

अरण्यकाण्ड

अत्रि मुनि द्वारा स्तुति

नमामि भक्त वंसलम् । कृपालु शील कोमलम् ॥

भजामि ते पदांबुजम् । अकामिनाम् स्वधामदम् ॥

निकाम् श्याम् सुन्दरम् । भवासुनाथ मन्दरम् ॥

प्रफुल्ल कंज लोचनम् । मदादि दोष मोचनम् ॥

प्रलंब बाहू विक्रमम् । प्रभोऽप्रमेय वैभवम् ॥

निष्कङ्ग चाप सायकम् । धरम् त्रिलोक नायकम् ॥

दिनेश बंश मन्दनम् । महेश चाप खन्दनम् ॥

मूनीन्द्र संत रंजनम् । सुरारि वृन्द भंजनम् ॥

मनोज वैरि बन्दितम् । अजादि देव सेवितम् ॥

विशुद्ध बोध विग्रहम् । समस्त दूषणापहम् ॥

नमामि इन्दिरा पतिम् । सुखाकरम् सताम् गतिम् ॥

भजे सशक्ति सानुजम् । शची पति प्रियानुजम् ॥

द्वन्द्वि मूल ये नराह । भजंति हीन मंसराह ॥

पतंति नो भवार्णवे । वितर्क वीचि संकुले ॥

विविक्त वासिनह सदा । भजंति मुक्तये मुदा ॥

निरस्य इन्द्रियादिकम् । प्रयांति ते गतिम् स्वकम् ॥

तमेकमद्भुतम् प्रभुम् । निरीहमीश्वरम् विभुम् ॥

जगद्गुरुम् च शाश्वतम् । तुरीयमेव केवलम् ॥

भजामि भाव बल्लभम् । कुयोगिनाम् सुदुर्लभम् ॥

स्वभक्त कल्ल पादपम् । समम् सुसेव्यमस्मिन् ॥

अनूप रूप भूपतिम् । नतोऽहमुर्विजा पतिम् ॥

प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्ज भक्ति देहि मे ॥

पठंति ये स्तवम् इदम् । नरादरेण ते पदम् ॥

ब्रजंति नात्र संशयम् । त्वदीय भक्ति संयुताह ॥

अरण्यकाण्ड

मुनि सूतीक्ष्ण द्वारा स्तुति

कह मुनि प्रभु सुन विनती मोरी । अस्तुति करौं कवन विधि तोरी ॥

महिमा अमित मोरि मति थोरी । रवि सनुख थदोत अंजोरी ॥

श्याम तामरस दाम शरीरम् । जटा मुकुट परिधन मुनिचीरम् ॥

पाणि चाप शर कति तुनीरम् । नौमि निरंतर श्री रघुवीरम् ॥

मोह विपिन घन दहन कृशानुह । संत सरोरुह कानन भानुह ॥

निश्चिचर करि बरुथ मृगराजह ॥ त्रातु सदा नो भव खग बाजह ॥

अरुण नयन रजीव सुवेशम् । सिता नयन चकोर निशेशम् ।

हर हृदि मानस बाल मरालम् । नौमि राम उर बाहू विशालम् ॥

संसय सर्प ग्रसन उरगादह । शमन सुकर्कश तर्क विषदह ॥

भव भंजन रंजन सुर यूथह । त्रातु नाथ नो क्इपा बरुथह ॥

निर्गुण सगुण विषम सम रूपम् । ्यान गिरा गोतीतमनूपम् ॥

अमलम अखिलम अनवद्यम अपारम् । नौमि राम भंजन महि भारम् ॥

भङ्ग कल्ल पादप आरामह । तर्जन क्रोध लोभ मद कामह ॥

अति नागर भव सागर सेतुह । त्रातु सदा दिनकर कुल केतुह ॥

অতুলিত ভুজ প্রতাপ বল ধামহ । কলি মল বিপুল বিভংজন নামহ ॥

ধর্ম বর্ম নর্মদ গুণ গ্রামহ । সংতত শম তনোতু মম রামহ ॥

জদপি বিরজ ব্যাপক অবিনাসী । সব কে হৃদয়ং নিরংতর বাসী ॥

তদপি অনুজ শ্রী সহিত খরারী । বসতু মনসি সম কাননচারী ॥

জে জানহিং তে জানহং স্বামী । সগুন অগুন উর অংতরজামী ॥

জো কোসলপতি রাজিব নযনা । করৌ সো রাম হৃদয় মম অযনা ॥

অস অভিমান জাই জনি ভোরে । মৈং সেবক রঘুপতি পতি মোরে ।

উত্তরকাণ্ড

শ্রীরাম কে রাজ্যাভিষেক কে পশ্চাত্ স্তুতি

জয় রাম রমারমনম শমনম্ । ভব তাপ ভয়াকুল পাহি জনম্ ॥

অবধেশ সুরেশ রমেশ বিভো । শরণাগত মাংগত পাহি প্রভো ॥

দসশীশ বিন্শন বীস ভুজা । কৃত দুরি মহাত্ম মহি ভূরি রুজা ॥

রজনীচর বৃন্দ পতাগ রহে । সর পাবক তেজ প্রচংড দহে ॥

महि मंदल मंदन चारुतरम् । धृत सायक चाप निषंग वरम् ॥

मद मोह महा ममता रजनी । तम पुंज दिवाकर तेज अनी ॥

मनजात किरात निपात किये । मृग लोग कुभोग सरेंन हिये ॥

हति नाथ अनाथनि पाहि हरे । विषया वन पाँवर भूलि परे ॥

बह रोग वियोगिन्हि लोग हये । भवदंष्ट्रि निरादर के फल ए ॥

भव सिंधु अगाध परे नर ते । पद पंकज प्रेम न जे करते ॥

अति दीन मलीन दुखी नितहीं । जिन्ह के पद पंकज प्रीत नहीं ॥

अवलंब भवंत कथा जिन्ह के । प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह के ॥

नहिं राग न लोभ न मान मदा । तिन्ह के सम वैभव वा विपदा ॥

एहि ते तव सेवक होत मुदा । मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ॥

करि प्रेम निरंतर नेम लिये । पद पंकज सेवत शुद्ध हिये ॥

सम मरनर नररररर आदररही । सव सत सुखी वररररंती मही ॥

मुनर मरनस पंकज भृंग भजे । रघुवीर महर रनधीर अजे ॥

तव नरम जपामर नमरमर हररी । भव रोग महरगद मरन अरी ॥

गुन सील कृपा परमरयतनम् । प्रनमरमर नररंतर श्रीरमनम् ॥

रघुनंद नरकंदय द्वंद्व घनम् । महरपाल वरलोकय दीन जनम् ॥

वरर वरर वर मरग—उं हरषर देहू श्रीरंग ।

पद सरोज अनपारनी भगती सदा सतसंग ॥

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

Last updated त्oday

<http://sanskritdocuments.org>

Rama Stuti (From Ramcharitmanas) Lyrics in Bengali PDF

% File name : stuti.itx

% Location : doc_z_otherlang_hindi

% Author : Goswami Tulasidas

% Language : Hindi

% Subject : philosophy/hinduism/religion

% Transliterated by : Mr. Balram J. Rathore, Ratlam, M.P., a retired railway driver
% Acknowledge-Permission: Dr. Vineet Chaitanya, vc@iiit.net
% Latest update : March 12, 2015
% Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com
% Site access : <http://sanskritdocuments.org>
%
% This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study
% and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of
% any website or individuals or for commercial purpose without permission.
% Please help to maintain respect for volunteer spirit.
%

We acknowledge well-meaning volunteers for Sanskritdocuments.org and other sites to have built the collection of Sanskrit texts.

Please check their sites later for improved versions of the texts.

This file should strictly be kept for personal use.

PDF file is generated [December 9, 2015] at Stotram Website